हिंदी
विभाग

प्रबंध:

भारत में नदियों को क्यों माता के रूप में पूजा जाता है।

- सरिता कुमारी गुप्ता
चौथा छमाही

भारत में नदियों को "माता" इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे जीवन, जल, खेती और सभ्यता का आधार रही हैं। वे सिर्फ पानी की धारा नहीं, बल्कि पोषण, आजीविका और सांस्कृतिक सम्मान का प्रतीक मानी जाती हैं कारण —

- नदियाँ पीने का पानी देती हैं और लोगों की दैनिक जरूरतें पूरी करती हैं
- इनके जल से खेती होती है, इसलिए यह भोजन और अर्थव्यवस्था से जुड़ी हैं
- नदी घाटियों के किनारे शहर और सभ्यताएँ विकसित हुई, इसलिए इन्हें जीवनदायिनी माना गया
- भारतीय संस्कृति में नदियों को पवित्र और पूजनीय माना जाता है,

इसलिए "माँ" या "माता" का सम्मानजनक संबोधन दिया जाता है भारत में नदियों को माता कहा जाता है, क्योंकि वे मनुष्य के जीवन का आधार हैं। जिस तरह माँ अपने बच्चे का पालन-पोषण करती है, उसी तरह नदियाँ हमें पानी, भोजन, खेती और जीवन देती हैं। गंगा, यमुना जैसी नदियाँ भारत की संस्कृति और आस्था से भी गहराई से जुड़ी हैं। इसलिए भारतीय परंपरा में नदियों को केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं बल्कि जीवनदायिनी शक्ति माना गया है।

वह बदल रही है दुनिया

- आदित्या चौधरी
चौथा छमाही

नारी शक्ति का स्वरुप आज पहले से कहीं अधिक सशक्त और प्रेरणादायक हो चुका है। वह अब केवल घर की चार दीवारों तक सीमित नहीं है, बल्कि हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही है। चाहे शिक्षा हो, विज्ञान, खेल या नेतृत्व हर जगह महिलाओं ने अपनी मेहनत और आत्मविश्वास से एक नई पहचान बनाई है।

इंदिरा गांधी ने देश का नेतृत्व कर यह साबित किया कि महिलाएँ मजबूत निर्णय लेने में सक्षम हैं। वहीं किरण बेदी ने अपने साहस और ईमानदारी से समाज में न्याय की नई मिसाल कायम की।

नारी के भीतर अपार सहनशीलता, प्रेम और शान्ति होती है। वह कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानती और हर चुनौती का डटकर सामना करती है। लेकिन आज भी कई स्थानों पर महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। हमें यह समझना होगा कि नारी का सशक्तिकरण ही समाज की उन्नति का मार्ग है। जब महिलाएँ शिक्षित और आत्मनिर्भर होंगी, तभी देश सच्चे अर्थों में प्रगति करेगा।

मुंशी प्रेमचंद की अनोखी उपन्यास 'निर्मला' के जरिए सामाजिक वास्तवता का प्रकाश

- विद्या कुमारी ठाकुर
द्वितीय छमाही

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के महान और प्रसिद्ध लेखक थे। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। उनके माता - पिता का नाम आनंदी देवी और अजायब लाल था। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी के लमही गाँव में हुआ था। प्रेमचंद जी ने अपने लेखन में समाज की सच्चाइयों, कुरीतियों और विशेष रूप से गरीबों तथा महिलाओं की समस्याओं को बहुत ही सरल और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। निर्मला उनका एक महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है।

यह उपन्यास नारी जीवन की कठिनाइयों और समाज में उसकी स्थिति को दर्शाता है। इसमें खासकर दहेज प्रथा और अनमेल विवाह जैसी समस्याओं को उजागर किया गया है, जो एक लड़की के जीवन को प्रभावित करती है।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें नारी के दर्द और उसके संघर्ष को बहुत ही सच्चाई से दिखाया गया है। यह बताता है कि समाज में स्त्री को बराबरी का सुविधा नहीं मिलता और उसे कई बार बिना किसी गलती के भी दुख सहना पड़ता है। लेखक ने यह भी दिखाया

है कि संदेह और रूढ़िवादी सोच परिवार को कैसे तोड़ देती है।

इस उपन्यास की नायिका निर्मला एक सरल, भोली और संस्कारी लड़की है, जिसके जीवन में खुशियाँ ज्यादा समय तक नहीं टिक पाती। दहेज की समस्या के कारण उसका विवाह एक उम्रदार व्यक्ति से कर दिया जाता है, जो उसके जीवन का सबसे बड़ा मोड़ बन जाता है। विवाह के बाद उसे न तो सच्चा प्रेम मिलता है और न ही विश्वास। उसके पति के मन में धीरे-धीरे संदेह पैदा होने लगता है जिससे घर का वातावरण तनावपूर्ण हो जाता है और परिवार में दूरियां बढ़ती जाती है। निर्मला अपने कर्तव्यों को निभाती रहती है, लेकिन उसे कभी सच्चा सुख नहीं मिलता। उसका जीवन धीरे-धीरे दुख और संघर्ष से भर जाता है।

अंत में 'निर्मला' हमें यह सिखाती है कि दहेज प्रथा जैसी कुरीतियाँ समाज के लिए बहुत हानिकारक है और स्त्रियों को भी सम्मान और समान अधिकार मिलना चाहिए। यह उपन्यास आज भी हमें सोचने पर मजबूर करता है कि समाज में नारी की स्थिति को सुधारना कितना जरूरी है।

सपनों की कीमत

- विद्या कुमारी ठाकुर
द्वितीय समाही

कॉलेज के Economics Department की दीवार पर एक लाइन लिखी थी — "Resources are limited but dreams are unlimited." इसी लाइन को रोज पढ़ती थी सिया, और हर दिन खुद को थोड़ा और मजबूत बनाती थी।

सिया एक साधारण परिवार से थी। घर की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। उसके पिता एक छोटे दुकानदार थे और माँ घर संभालती थी। कई बार घर की जरूरतें पूरी करना भी मुश्किल हो जाता था, इसलिए सिया ने बचपन से ही समझ लिया था कि जिंदगी में हर चीज आसानी से नहीं मिलती।

लेकिन सिया की सोच अलग थी। उसने Economics को सिर्फ एक subject के तरह नहीं, बल्कि अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लिया था। उसे समझ आ गया था कि जब कम हो, तो उनका सही उपयोग हो असली समझदारी होती है। वह पुरानी किताबों से पढ़ाई करती, लाइब्रेरी में घंटों बैठती और अपने नोट्स खुद तैयार करती थी।

कई बार उसके दोस्तों के पास नए कपड़े और बेहतर सुविधाएँ होती थी, जबकि सिया के पास बहुत सीमित चीजें थी। फिर भी उसने कभी हार नहीं मानी। वह जानती थी कि उसका हर छोटा Sacrifice उसके

Future के लिए एक Investment है।

एक दिन Economics की class में Sir ने पूछा -
"What is the biggest investment in life?"
पूरी class अलग - अलग जवाब दे रही थी, लेकिन सिया ने शांत स्वर में कहा —
"Hard work and Patience".

उसका जवाब सुनकर पूरी class कुछ पल के लिए शांत हो गई समय के साथ सिया की मेहनत रंग लाने लगी और आखिरकार वह दिन आ ही गया result घोषित हुआ, तो सिया ने पूरे Economics Department में Top पाया। उस दिन उसके पास कोई नया सूट नहीं था, लेकिन उसकी मेहनत और आत्मविश्वास ही उसकी सबसे बड़ी पहचान बन गयी।

संदेश —
जिंदगी भी Economics की तरह होती है - जहाँ Resources सीमित होते हैं, वहाँ सही निर्णय लेना बहुत जरूरी होता है। जो अपने सपनों में मेहनत और धैर्य का निवेश करता है, वही एक दिन सफलता का सबसे बड़ा लाभ प्राप्त करता है।

धूप की तलाश

- नमिता भूमिक
चौथा छमाही

अभी सूरज ने ठीक से अपनी आँखें भी नहीं खोली थीं, पर राधा की नींद टूट चुकी थी। अलार्म बजने से पहले जाग जाना अब उसकी आदत नहीं, उसका स्वभाव बन गया था। रसोई के ठंडे फर्श पर पैर रखते ही एक सिहरन दौड़ गई, और चाय के पानी के उबलने के साथ ही उसके दिमाग में दिनभर के कामों की लिस्ट भी उबलने लगी।

राधा के लिए 'गृहिणी' शब्द सिर्फ एक पहचान नहीं, एक अंतहीन ड्यूटी थी। बच्चों के स्कूल बैग, पति का टिफिन और घर की सफाई - इन सब के बीच राधा का अपना अस्तित्व कहीं गुम हो गया था। जैसे आटे की लोइयों के बीच उसके सपने भी दबकर चपटे हो गए हों।

घर से बाहर निकलते ही जंग का दूसरा मैदान शुरू होता। खचाखच भरी बस में अपनी जगह बनाना, वो अनचाही छुअन और तंज कसती निगाहें - यह सब उसके सफर का हिस्सा थे। ऑफिस में भी वही कहानी थी। मेज पर फाइलें उतनी ही ऊँची थीं जितनी उसके पुरुष साथियों की, पर जब बात तरक्की की आई, तो जवाब मिला: "राधा, तुम्हारा ध्यान तो घर और बच्चों में रहता है, तुम ये जिम्मेदारी संभालोगी?"

उस रात राधा आईने के सामने खड़ी हुई। उसने अपनी थकी हुई आँखों में खुद को ढूँढने की कोशिश की। क्या वह सिर्फ एक 'मशीन' है जिसे सबकी जरूरतें पूरी करनी हैं?

लेकिन राधा हारने वालों में से नहीं थी। उसकी ताकत उसके आँसुओं में नहीं, उसकी जिद में थी। वह अपनी बेटी को पढ़ाते समय अक्सर कहती, "बेटा, दुनिया तुझे झुकने के लिए कहेगी, पर तू आसमान की तरफ देखना मत छोड़ना।

"एक दिन उसकी बेटी ने उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा, "माँ, मैं बड़ी होकर आपकी तरह सबको संभालना चाहती हूँ, पर अपनी पहचान खोकर नहीं। मैं अपने सपने जीना चाहती हूँ।" राधा की आँखों में नमी थी, पर होठों पर एक सुकून भरी मुस्कान। उसने धीरे से कहा, "यही तो मेरी जीत है।"

निष्कर्ष: राधा की कहानी सिर्फ त्याग की नहीं, बल्कि उस खामोश क्रांति की है जो हर घर की रसोई और ऑफिस के केबिन में चल रही है। औरत पत्थर नहीं है जो सब सह ले, वह तो नदी है जो अपना रास्ता खुद बनाना जानती है।

पंख और आकाश

- सरिता कुमारी गुप्ता
चौथा छमाही

अदिति जब सुबह 6 बजे उठती, तो उसके घर की खिड़की से उगते सूरज की पहली किरण सीधी उसकी डायरी पर पड़ती थी। वह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में प्रोजेक्ट मैनेजर थी, लेकिन उसके दिन की शुरुआत किसी "मैनेजर" की तरह नहीं, बल्कि एक माँ, एक बेटी और एक गृहणी के रूप में होती थी।

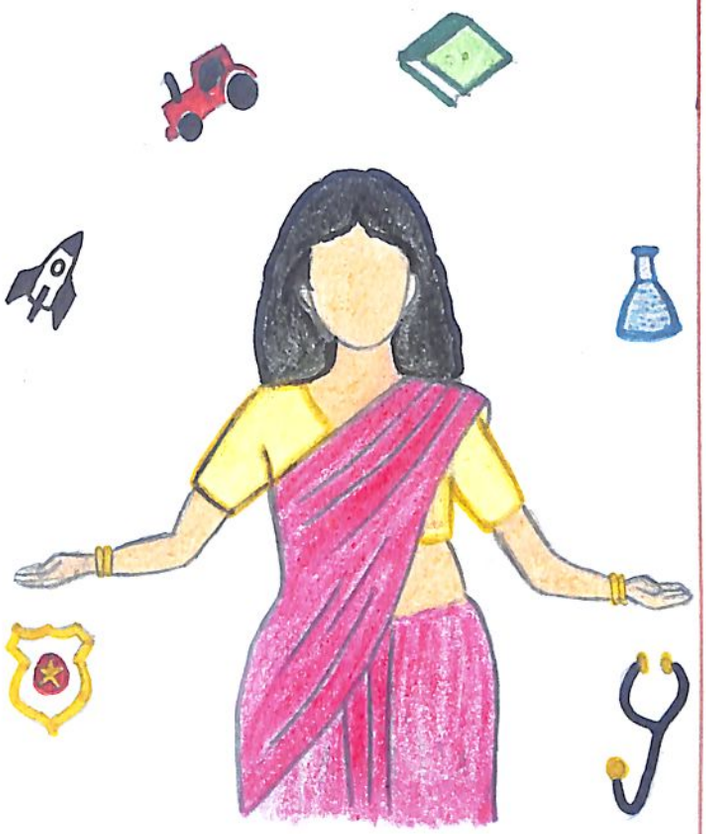

एक हाथ में चाय का कप और दूसरे में लैपटॉप, अदिति अकसर सोचती कि 'आज की नारी' होने का असली मतलब क्या है? क्या वह सिर्फ ऑफिस जाकर पैसे कमाना है? या घर को सलीके से संभालना? उसे जल्द ही जवाब मिल गया।

एक दिन ऑफिस में एक बहुत बड़ा प्रेजेंटेशन था। उसी सुबह उसकी बेटी को तेज बुखार हो गया। एक पल के लिए अदिति ठिठक थी। पुरानी पीढ़ी की सोच कहती थी कि घर चुनो और आधुनिक दौड़ कहती थी कि करियर को प्राथमिकता दो। लेकिन अदिति 'आज की नारी' थी। उसने बीच का रास्ता चुना। उसने अपनी टीम को घर से ज़ूम कॉल पर ब्रीफ किया, बेटी के माथे पर ठंडी पट्टियाँ रखीं और शाम को जब वह ऑफिस पहुँची, तो उसका प्रेजेंटेशन सबसे सटीक था।

ऑफिस में कुछ लोग बुदबुदा रहे थे, "पारिवारिक जिम्मेदारियों

के साथ यह काम कैसे कर पाएगी?" अदिति ने मुस्कारक जवाब दिया, " जिम्मेदारी मेरी कमजोरी नहीं, मेरी ताकत है। जो एक साथ चार लोगों का खाना, बच्चे की पढ़ाई और बजट संभाल सकती है, वह कंपनी का प्रोजेक्ट भी बखूबी संभाल सकती है।" उसकी आवाज में कोई अहंकार नहीं था, बल्कि एक आत्मविश्वास था। वह जानती थी कि आज की नारी को अब किसी के सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है। वह अब 'सहनशक्ति' की मूर्ति मात्र नहीं है, बल्कि वह ' निर्णयशक्ति' का प्रतीक है।

रात को जब सब सो गए, अदिति ने अपनी डायरी में एक लाइन लिखि।

" आज की नारी वह नहीं है जो पुरुषों जैसी दिखने या बनने की कोशिश करे, बल्कि वह है जो अपनी स्त्रीत्व को अपनी शक्ति बनाकर दुनिया को अपने तरीके से जीत ले।"

अदिति की कहानी केवल उसकी नहीं, बल्कि उन करोड़ों महिलाओं की है जो चूल्हे की आँच से लेकर अंतरिक्ष की ऊंचाइयों तक, हर जगह अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही है।

कहानी का सार : आज की नारी ' त्याग ' के साथ 'तर्क' करना भी जानती है। वह कोमल है, पर कमजोर नहीं। वह अपनी परंपराओं का सम्मान करती है, लेकिन अपनी बेड़ियों को तोड़ना भी बखूबी जानती है।

नारी : सृष्टि का आधार

- सरिता कुमारी गुप्ता
चौथा कुमारी

वह कोमल है, पर कमजोर नहीं,
उसके भीतर छिपा एक शोर नहीं।
वह शांति की मूरत, सहनशीलता की धार,
पर वक्त पड़े तो चंडी का अवतार।
कभी माँ बनकर संसार को गढ़ती है,
कभी बेटी बनकर खुशियों से भरती है।
हौसलों के आसमान में उसने लगाई है उड़ान,
अब सीमाओं से परे है उसकी अपनी पहचान।
धैर्य की वह प्रतिमा, ममता की वह खान है,
त्याग और तपस्या का दूसरा नाम है।
वह रुकती नहीं, वह थकती नहीं,
मुसीबतों के आगे वह झुकती नहीं।
नारी शक्ति हो इस युग उजियारा है,
उसी के हाथों में कल का सहारा है,
उसे पूजने की नहीं, बस सम्मान की जरूरत है,
क्योंकि वह खुद ईश्वर की सबसे सुंदर मूरत है।
वह अब अबला नहीं, जो बेड़ियों में जकड़ी जाए,
वह मशाल है, जो खुद अपना रास्ता बनाए।
उसके हाथों में कलम भी है, और कमान भी,
वह धरती की प्रार्थना है, और ऊँचा आसमान भी।
कभी मीरा की शक्ति, कभी झाँसी की तलवार,
वह सृजन की शक्ति है, वह प्रेम का विस्तार।

नदी सी नारी

- दिव्या कुमारी सिंह
द्वितीय छमाही

वह केवल एक नारी नहीं,
वह एक निरंतर बहती नदी की धारा है।
जो जख्म, निंदा, कैद सब कुछ सहकर भी,
अपने चेहरे पर वह दुख नहीं दिखलाती,
वह केवल एक नारी नहीं होती।
लोहे की जंजीरों से जकड़े अपने पैरों की
परवाह न करती,
वह एक नदी सी बहती रहती।
रास्ते में आई अपनी बाधाओं को
नजर अंदाज करे,
वह बहती रहती।
"तुम एक नारी हो,"
तुमसे यह नहीं होगा,
"तुम एक नारी हो, तुमसे कुछ नहीं होगा"।
हाँ मैं हूँ नारी।
हाँ मैं नारी हूँ, पर लाचारी नहीं।
तुमने कहा मैं यह नहीं कर सकती,
तुमने कहा मैं वह नहीं कर सकती,
पर मैंने तो लाखों कठिनाइयाँ सहकर भी,
अपने दुख को अपने आँचल में छुपाते हुए,
अपने जंजीरों को तोड़ते हुए,
मैं खिलखिलाती सी नदी बनकर बहती गई,
मैं बहती गई
क्योंकि मैं केवल एक नारी नहीं,
मैं एक नदी हूँ,
एक बहती नदी॥

ছবি

Bhowmik.
Namrata Bhowmik
4th semester

Namrata Bhowmik
4th Semester

Angana Borah
4th Semester

Jubi Soncual
2nd Semester

Dibya Kumari Singh
2nd Semester

Vidya Kumari Thakur
2nd Semester

Vidya

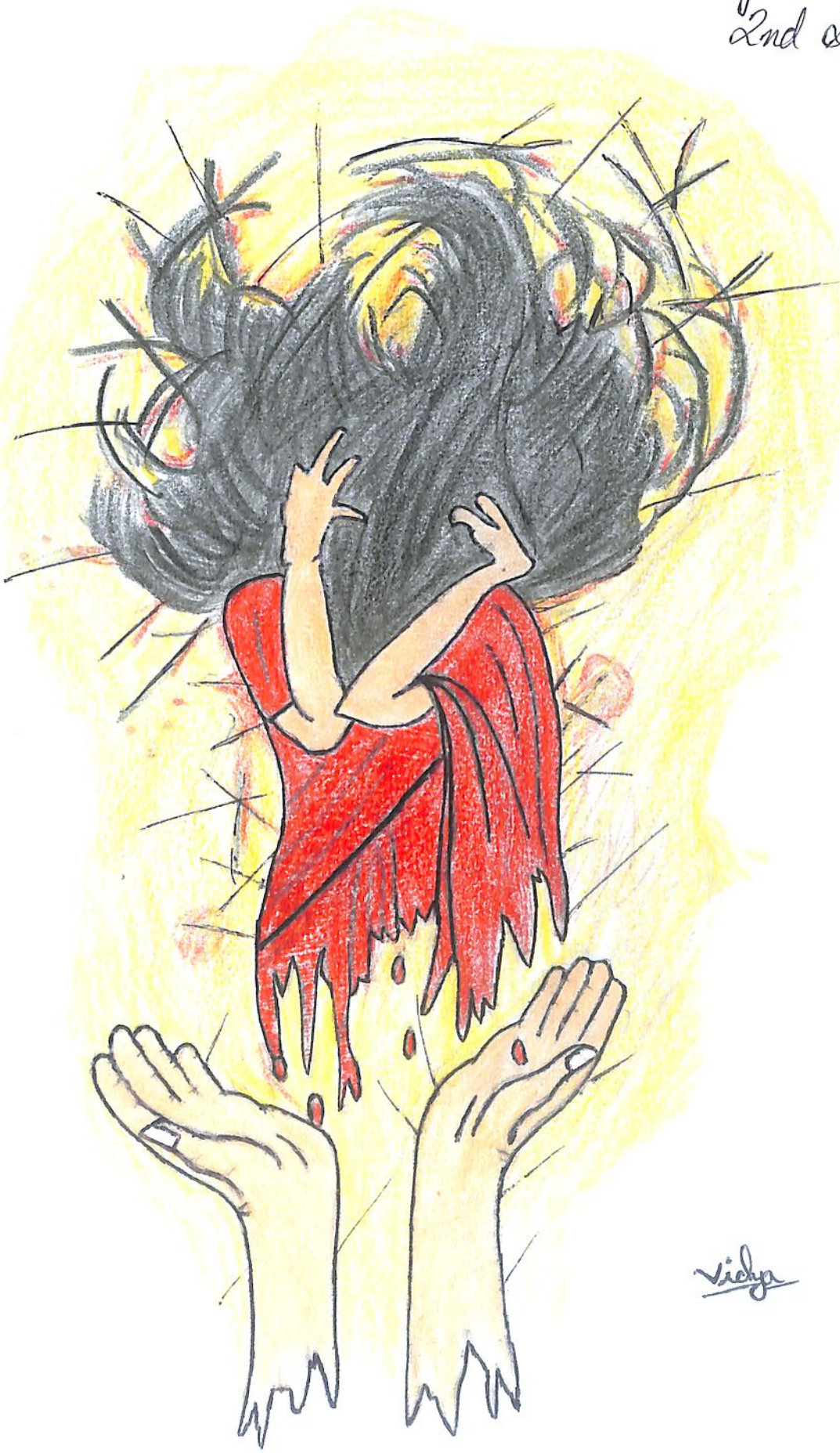

"এগৰাকী নাৰী শিক্ষিত হোৱা মানে এটা পৰিয়াল শিক্ষিত হোৱা।"

— মহাত্মা গান্ধী

"মই মোৰ কণ্ঠস্বৰ আনৰ বাবে উচ্চ কৰা নাই, বৰঞ্চ ঘিসকলৰ কণ্ঠ নাই তেওঁলোকৰ বাবেহে উচ্চ কৰিছোঁ।"

— মালালা ইউছুফজাই